शेखर

जनम : 22 जुलाई 1952
स्थान : जयमंगला (शेखपुरा)

शेखर राष्ट्रीय ख्याति के कहानीकार हथ । ई हिन्दी आउ मगही दुन्नो भासा में लिखऽ हथ। ई मगही आन्दोलन के एगो मसहूर कार्यकर्त्ता भी हथ।

ई कहानी के जरिए अप्पन देस के प्रति भक्ति, बलिदान आउ अप्पन सबकुछ निछावर करे के संदेस देवल गेल हे। आंचलिक कहानी का होवऽ हे, ई पाठ से समझ में आ जाहे । साम्प्रदायिक सद्भाव पर अधारित ई कहानी गंगा-जमुनी संसकिरती के नीमन नमूना हे। ई कहानी देस के प्रति नारी के तेयाग आउ बलिदान के अद्भुत उदाहरन हे।

मोरचा

ऊ हमरा सँकरी के कछार पर मिललइ हल, जब भखरा के पहाड़ पर चुक्को-मुक्को बइठल संझउआ सुरुज सुतगामा के जंगल में घुरमुरिया मार के साहस जुटा रहलइ हल आउ लाज से रुत-रुत ओकर गाल से झरइत कुमकुमी जोत ओकर पसेना से चपचपायल चेहरा के सिनुरिया आम आउ ओकर चोली वला उठान के केला के फूल वला सौरभ दे रहलइ हल।

नदी के भयावन भरकोसा बलुआ पाट पार करि के थकान, लगेदम चलते जाय के ओकर साहस छीन लेलकइ हल आउ नयँ चाहला के बाद भी हाँफइत आके ऊ महुआ के जड़ के पास हमरा बगल में, पीछू भार दुन्नो हाथ के टेक लेवइत पाँव पसार के दीदारगंज के यक्षनी सन बइठ रहलइ हल। लमहर-लमहर साँस भरइत ओकर छाती उठ-बइठ रहलइ हल। ओकर देह एगो खास लय में ऊपर-नीचू डोल रहलइ हल।

हौलै से चेहरा हमरा दन्ने करि के कनखी से ऊ दू बार हम्मर मुँह ताकलकइ हल। ओकर मन में कोय बात आ आउ जा रहलइ हल। साइत कोय बात ऊ हमरा

से कहे इया पूछे ला चाहऽ हलइ, मुदा एगो खास तरह के जनाना संकोच हलइ जे ओकर ठोर के अजदह बनइले हलइ।

एकर ई हाल पर हमरा हँसी आ गेलइ हल। पहिले धीरे से, फिन हम ठठाके हँसि पड़लिये हल। चउँक के ऊ हम्मर मुँह ताके लगलइ, फिन विहँस के पुछलकइ —'काहे, की बात हइ ?'

'ईहे कि ढेर देरी से तूँ कुछ पूछेला चाह रहलहो हे, मुदा बात हो कि अंदरे घुमरि के फुस्स !'

'इस्स ! ...दइया गे, तूँ तो नजूमी नियर बात करऽ हो जी, कहाँ घर हो ?—बायाँ हाथ पर गाल रखि के ऊ एगो खास अंदाज में मुसकइत पुछलकइ।

ओकर सवाल से अचक्के हम्मर मन उदास हो उठलइ हल आउ ठोर बिचकावइत कोय संन्यासी के अंदाज में हम्मर मुँह से निकलि गेलइ हल—'बस, जहाँ धर, उहइँ घर ! कभी केकरो घर, कभी होटल इया धरमसाला इया कोय गेस्ट हाउस इया कोय इयार-दोस्त के घर में डेरा। अप्पन कहेवला कोय ठेकाना नयँ !'

'सच्चो ! मुदा अइसन काहे ?' ऊ हैरत से हम्मर मुँह ताके लगलइ हल।

'अदमी के पापी मन दुनिया भरके माल मारि लेवेला चाहऽ हइ। ई पापी स्वारथ में अदमी अइसन आन्हर हो जा हइ कि अप्पन आउ पराया के सब भेद भुला के नेह-नाता के सब संबंध तोड़ के प्रेत आउ राकस बनि जा हइ। ई तरह अदमी के राकस बने के कारन महाभारत होलइ। अभी हिंदुस्तान-पाकिस्तान के जुद्ध ! ईहे जुद्ध के जे कारन हइ, उहे हमरा फुटपाथ पर ला देलकइ हे आज, बना देलकइ हे बेघर, बेपता !

'काहे ?' ऊ हैरत से हम्मर मुँह ताकइत बात समझे के कोसिस कर रहलइ हल।

'ई लेल कि हमरा जुद्ध से नफरत हइ ! हम जानऽ हियइ जुद्ध के परिनाम ! महाभारत में दुन्नो खतम हो गेलइ। अगर पांडव के हक नञ् मारतइ हल, तऽ होतइ हल महाभारत ? ईहे से तो आन्हर स्वारथ से हमरा नफरत हइ। आउ स्वारथ से नफरत रखे वला अदमी के घर कहाँ ?'

'अच्छा, तऽ ई बात हइ !' चुलबुल अंदाज में बिहँसि के पुछलकइ **हल ऊ** — 'मुदा जात, कउन जात के हहो ?'

'देखि तो रहलहो हे, मरद हिए कि एकरो में संदेह हो ?'

ऊ खिलखिला पड़लइ हल—'से तो ठीक, मुदा जनम वला जात।'

'ओ, ऊ ? तऽ हिंदू-मुसलमान-सिक्ख-इसाई – सब ।'

'अच्छा ठीक हो, मत बतावऽ! मुदा एन्ने, एन्ने कहाँ ?' ऊ आजिज आके पुछलकइ हल।

'एन्ने सतगामा के जंगल में गरीब आदिवासी के बीच ओकर लोक परंपरा पर किताब लिखेला खोज करि रहलिए हे, आउ कुछ ?'

आउ हम्मर मुँह ताकइत ऊ गंभीर हो गेलइ हल, फिन नीचू ताकइत जमीन खुरचे लगलइ हल अंगुरी से। अचक्के मुँह उठा के फिन पुछलकइ हल—'आउ अभी, अभी कहाँ जा रहलहो हे ?'

काहे ? अभी तो गोविंदपुर जा रहलिए 'हे ! आउ तूँ ?' हम ओकर मुँह देखे लगलिए हल।

हम्मर सवाल जइसे सवाल नयँ, बिजली के करंट रहे, ओकर रोम-रोम झनझना उठलइ हल। हमरा भिर बइठ के बातचीत में ऊ भूलि गेलइ हल कि ऊ के हइ, तीन दिन से रात-दिन कउन पीड़ा में घुटल करऽ हलइ आउ की सोंचि के काहे ला घर से निकललइ हल।

हम्मर सवाल जइसे उठाके ओकरा उहे माहौल में जा पटकलइ हल, जेह में हर तरफ से ठूल आउ ताना आंकर अतमा के मथि के धर देलकइ हल।

परसूँ ओकर भाय के चिट्ठी कारगिल मोरचा से अइलइ हल। कानोकान खबर मिलते मातर करीम के घर में जन्नी-मरद के अइसन हुजूम उमड़लइ कि कहईं तिल धरे के जगह नयँ। ऊ भी दउड़ल गेलइ आउ भउजाय के बगल में जा खड़ी होलइ हल।

करीम के जोरू के हाथ से चिट्ठी ले के रमेसर पाँड़े फाड़ि के पढ़े लगलन हल। सब कान लगा के सुने लगलइ हल।

'अम्मी, अब्बा आउ समीना के अस्सलाम अलइकुम !... आगे सब समाचार ठीक हइ। हम मई के अंतिम हफ्ता में दुसमन के मारि भगावे ला कारगिल मोरचा पर पहुँच गेलिअइ हल आउ काली पगड़ी वाला के दुआ से गोरखा, नागा, गढ़वाल आउ हमनी बिहार रेजीमेंट के साथी सब तीन तरफ से अप्पन ढेरो साथी से बिछुड़इत आउ दुस्मन के पथार लगावइत टाइगर चोटी पर अप्पन झंडा फहरा के फतह हासिल करि

लेलिए हे। मुदा ई खुसी के दौर में भी हमरा एक्के बात घाव सन दुखइत रहऽ हइ कि परवेज हमरा साथे नयँ हथिन। मोरचा के नामे से हुनखा हद्दस समा गेलइ आउ श्रीनगर छावनी अस्पताल में भर्ती हो गेलन। हम नयँ समझऽ हलिए कि हम्मर बहनोइ एत्ते कायर होतइ।'

आउ तखने से लोग ओकरा ताना मारे लगलइ हल—'तऽ, रेसमा के सइयाँ डरफोंकवा ! गे दइया, सब तो लड़ि रहलइ हल आउ एगो ई जनाब हइ कि खटिया पर टॉनिक पी रहलइ हे, छी ! हमनी तो अइसन के सट्टे ला नयँ दिअइ।'

तीन दिन से लगातार जन्ने जाय तन्ने अइसने ठूल, ताना, सुनइत-सुनइत ओकर देह में सल्ले-सल्ले आँधी धधके लगलइ आउ आज दुपहर होते पइसा निकालि के छूटल तीर सन घर से निकलि पड़लइ हल। ऊ इहो नयँ सोचलकइ कि गोविन्दपुर पहुँचते-पहुँचते साँझ हो जइतइ। हरिन मता देवेवला बीच दुपहरिया में परवेज से फोन पर बतियावे ला ऊ घर से निकसि गेलइ आउ चलते-चलते परेसान, भरकोसा पाट ओली सँकरी नदी पार करइत-करइत तो जइसे झुलसि के मातल, कछार के महुआ गाछ तर झमा के बइठलइ हल। एक भाव आवइत आउ एक भाव जाइत ओकर चेहरा हवा के झकोर से लहरी दर लहरी उठइत कोय तलाव के जल सतह सन हो उठलइ हल। ओकर आँखि कभी गोस्सा आउ नफरत से जलि के सिकुड़ि उठऽ हलइ तऽ कभी बदराल अकास सन चुचुआल।

फिन हम तनि दम मार के टोकि देलियइ हल—'की बात हइ, तूँ बोललहो नयँ ?'

ऊ जइसे सुतल से अचक्के जागि गेल रहे, लजा के बोललइ—'की बतइयो हम अप्पन मरद के फोन करे जा रहलिए हे। सब्भे जवान सरहद पर दुसमन से लड़ि रहलइ हे, मुदा एगो हम्मर मरद हइ कि देहजरुआ हद्दस से बहाना बनाके श्रीनगर सैनिक अस्पताल में बेमार पड़ल हइ। आउ इहाँ के लोग हइ कि उठइत-बइठइत ताना दे-दे के हमरा राहो चलना मोसकिल करि देलक हे ! इहे से ई हिजड़ा मरद से...' कहइत-कहइत अँचरा में मुँह लेके ऊ हिचकी भरइत रोवे लगलइ हल। हमरा काटऽ तऽ खून नयँ।

जीवन में कत्तेक तरह के लोग से अबतक कत्तेक बार वास्ता पड़लइ हे। मगर पचीस-छब्बीस साल के ई गँवइ औरत के जे आहत स्वाभिमान से आज दरसन भेलइ, से आज के ई मतलबी जुग में साइत दुरलभ हइ। अचरज आउ सरधा से हम

ओकर मुँह ताके लगलिए हल। खूब ढाढ़स देके हम आदर के साथ ओकरा गोविंदपुर तारघर ले गेलिए हल, साइत पहिले भी इहाँ से ऊ कइएक बेर फोन करि चुकलइ हल। काहे कि तारबाबू बगैर कुछ पुछले, ओकर पुरान चिट्ठी से नंबर लेके श्रीनगर सैनिक छावनी के नंबर डायल करि देलकइ। हम बगल में दम साधि के ओकर एक-एक बात सुनेला कान लगा देलियइ हल। गोस्सा से ओकर देह हिल रहलइ हल आउ अंदर जइसे कोय आँधी हाहाकार करि रहलइ हल।

ओन्ने से फोन रिसीव होलइ आउ कोय अस्पताल कर्मी सैनिक परवेज के बोला लइलकइ हल। ओन्ने से की बात होलइ, हमरा मालूम नयँ, मगर एन्ने से रेसमा ओकरा धिक्कार रहलइ हल। पहिले तो जइसे बोली में मिसरी घोर देलकइ—'अस्सलाम अलइकुम परवेज!' मुदा तुरतहीं अवाज बदल देलकइ हल— 'सुनऽ हिए कि जुध बंद हो गेलइ, अब तो तोर मन ठीक हो जाय के चाही ।'

साइत ओन्ने से हर्ट में प्रोबलेम के बात ऊ कहलकइ हल। काहे कि ओकर बात ई लोकि लेलकइ हल—'हर्ट !...च...च...हमनी सबके तो डर लगि रहलइ हल कि भरले जवानी में तोरा उहइँ कोढ़ी तो नयँ फूटि गेलउ ? छी छी ! तूँ लड़ाई में मर जइते हल, तब जेत्ते दुख होयत हल, ओकरा से जादे दुख तोहर कायरपन से हे। लोग-बाग हमनी के राहो चलना दूभर करि देलक हे।' पल भर चुप रहिके रेसमा दोसर चोट कइलकइ हल—'जानऽ हीं परवेज, सीमा पर लड़इत अगर तूँ सहीद हो जइतहीं हल, तऽ जिगर के खून से तोहर कब्र पर दीया बारतिअउ हल। मुदा अब...अब डर से चूड़ी पेन्ह के साया में घुसि जायवला, डर से पैजामा में पेसाब करि देक्वेला तोरा सन कायर के, कसम काली पगड़ी वाला के, सौहर कहे में जहर खा लेवे के मन करऽ हउ । जानऽ हीं अम्मी की कहऽ हउ ? कहऽ हउ कि अगर ई जानतिए हल, तऽ परवेजवा के सौरिए घर में नोन चटा देतियइ हल। से एक बात पुछिअउ परवेज ? ई दुनिया में एक भी औरत हइ जेकरा बेइमान, चोर, बलत्कारी, घोटालेबाज, कातिल आउ....आउ तोरा सन कायर मरद के बेटा आउ सौहर कहइत गरान नयँ आवइ ?...इहे सेती एक बात कहइत ही परवेज कि तूँ मर काहे नयँ गेलें ? अब हमनी सब के सब तोहरा सन हिजड़ा से नफरत करऽ हिअउ ! थूह।'

आउ रिसीवर हाथ से छोड़ि के भद्द सन बइठइत रेसमा बुक्का फाड़ि के कुछ ई तरह से जार-बेजार होके रोवे लगलइ हल, जइसे अचक्के ऊ बेवा हो जाय के कचोट बोक से भरि गेल रहे।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) 'मोरचा' कहानी के का संदेस हे ?

   (ख) **सँकरी** के कछार पर कहानीकार शेखर के कउन मिललइ आउ ओकर का चित्र खिंचलन ?

   (ग) कहानीकार औरत के देख के का सोचे लगऽ हे ?

   (घ) 'मोरचा के नामे से हुनका हद्दस समा गेलइ'—ई के कह रहल हे आउ काहे ?

   (ङ) 'इहे एक बात कहइत ही परवेज कि तूँ मर काहे नञ् गेले ?'—ई के कह रहल हे आउ काहे ? अइसन बात सुनके तोर मनोदसा पर कउन परभाव पड़ल ?

   (च) 'हमरा काटऽ त खून नयँ'—ई बात के कह रहल हे आउ काहे ? कहानीकार के मनोदसा बतावऽ।

लिखित :

1. कहानीकार शेखर के परिचय पाँच पंक्ति में दऽ।
2. 'मोरचा' कहानी लिखे के उद्देस का हे ? तीन वाक्य में बतावऽ।
3. 'मोरचा' कहानी के नायिका कउन हे ? ओकर चरित्र के विसेसता बतावऽ।
4. ई. कहानी के माध्यम से कहानीकार जउन संदेस देवेला चाहऽ हथ, तीन वाक्य में बतावऽ ?
5. चिट्ठी पढ़ के फौजी के औरत पर कउन प्रभाव पड़ल ? एकरा समझा के लिखऽ।
6. नीचे लिखल वाक्य के व्याख्या करऽ :—

   सीमा पर लड़इत अगर तूँ सहीद हो जइतहीं हल, तऽ जिगर के खून से तोहर कब्र पर दीया बारतिअउ हल। मुदा अब, अब डर से चूड़ी पेन्ह के साया में घुस जायवला, डर से पैजामा में पेसाब कर देवेवला तोरा सन कायर के, कसम काली पगड़ी वाला के, सौहर कहे में जहर खा लेवे के मन करऽ हउ।

8. कहानी के तत्व के आधार पर 'मोरचा' कहानी के समीक्षा करऽ?

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल सबद से मिलते-जुलते सबद बतावऽ :

   (क) संकोच

   (ख) साहस

   (ग) घुरमुरिया

   (घ) चपचपायल चेहरा

   (ङ) सिन्दुरिया आम

2. कहानी पाठ से पाँच गो विसेसन चुन के ओकरा से वाक्य बनावऽ।

3. नीचे लिखल सबद में कउन-कउन समास हे :

   (क) ऊपर-नीचे

   (ख) धरमसाला

   (ग) बात-चीत

   (घ) सिक्ख-ईसाई

   (ङ) महाभारत

योग्यता-विस्तार :

1. देसभक्ति संबंधी कोई एगो दोसर कहानी सुनावऽ।

2. 'जुध' के पच्छ-बिपच्छ में वाद-विवाद प्रतियोगिता के आयोजन करऽ।